विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : ७ ■ फरवरी २०२५

प्रेरणा और प्रगति की कहानी

सतगांव (बुलढाणा): बुलढाणा जिले के सतगांव, भुसारी स्थित जिला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल का दौरा मैंने प्रोजेक्ट ऑफिसर अजय के साथ किया। यह स्कूल अपने शिक्षकों की रचनात्मकता और मेहनत के लिए प्रसिद्ध है।

स्कूल में प्रवेश करते ही मेरा स्वागत एक सुंदर गुलदस्ते से किया गया। प्रधान अध्यापक ने गर्व से बताया "यह गुलदस्ता हमारे स्कूल के बगीचे से है, जिसे बच्चों ने खुद तैयार किया है।" उनके उत्साह और बच्चों की भागीदारी ने दौरे की शुरुआत को खास बना दिया।

अजय ने पहले ही बताया था कि इस स्कूल के शिक्षक शानदार काम कर रहे हैं पर वे इनोवेटिव तरीकों को विनोबा ऐप पर साझा नहीं करते।" यह सुनकर मेरे मन में सवाल उठा "आखिर क्यों वे अपना उत्कृष्ट कार्य विनोबा ऐप पर साझा नहीं करते? क्या यह जानकारी की कमी है, रुचि की या फिर कोई और कारण।"

इन सवालों के उत्तर जानने के लिए मैंने स्कूल का दौरा किया। प्रधान अध्यापक और शिक्षकों का उत्साह और बच्चों के प्रति समर्पण देखकर मैं प्रभावित हुआ। उन्होंने बताया कि उनका स्कूल बच्चों को पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रखता।

चिल्ड्रन बैंक में बच्चे लेन-देन और खातों का प्रबंधन कर गणितीय कौशल और जिम्मेदारी सीखते हैं। जबकि, बागवानी और किले बनाकर विज्ञान, इतिहास और रचनात्मकता में प्रगति करते हैं, जिससे उनकी समग्र शिक्षा होती है।

"यह वाकई शानदार है, आप इतनी मेहनत और इनोवेटिव काम कर रहे हैं, तो इसे विनोबा ऐप पर साझा क्यों नहीं करते?" उन्होंने ईमानदारी से जवाब दिया, "हमें प्रतिस्पर्धा में दिलचस्पी नहीं है। हम अपने स्कूल के बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण और समग्र शिक्षा दे कर संतुष्ट हैं।"

मैंने उनके उद्देश्यों को सराहते हुए कहा, "सोचिए, अगर जिले के अन्य शिक्षक आपके इन तरीकों को अपनाते हैं तो कितने बच्चों को लाभ होगा। आपकी मेहनत का प्रभाव सिर्फ आपके स्कूल तक सीमित नहीं रहेगा। बल्कि, पूरे जिले में फैल जाएगा।"

यह सुन कर शिक्षक विचार करने लगे। उनकी झिझक दूर करने के लिए मैंने जोड़ा, "आपकी गतिविधियां अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक हो सकती हैं और यह आपकी उपलब्धि होगी।" शिक्षकों ने सहमति जताई, "सर, अब से हम नियमित रूप से अपने वीडियो विनोबा ऐप पर साझा करेंगे।"

अजय ने शिक्षकों को दोबारा प्रशिक्षण दिया और नियमित रूप से फॉलो-अप जारी रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि 12 नवंबर से 31 दिसंबर के बीच शिक्षकों ने 41 वीडियो पोस्ट किए, जबकि इससे पहले केवल 6 वीडियो पोस्ट किए गए थे पूरे साल में।

नतीजतन, स्कूल के एक शिक्षक श्री महेश कुलकर्णी ने अपने प्रयासों से सबको प्रेरित किया। वे नवंबर में "महावाचन" के विजेता बने और दिसंबर में ब्लॉक स्तर पर 'पोस्ट ऑफ द मंथ' के भी विजेता रहे। उनकी सफलता ने अन्य शिक्षकों को भी प्रेरित किया। सुश्री मिनाक्षी हरिसिंह परिहार को क्लस्टर स्तर पर 'पोस्ट ऑफ द मंथ' का विजेता घोषित किया गया।

इस दौरे का सबसे खूबसूरत हिस्सा यह था कि शिक्षकों ने यह महसूस किया कि उनके प्रयास जिलेभर के बच्चों के लिए फायदेमंद हो सकते हैं, जो उनके उद्देश्यों को पूरा करता है। उन्होंने यह भी समझा कि विनोबा ऐप एक ऐसा मंच है जो उनके इन प्रयासों को व्यापक स्तर पर साझा कर सकता है और बेहतर शिक्षा के लिए माध्यम बन सकता है। आज यह स्कूल विनोबा ऐप पर नियमित पोस्ट करने वाले अग्रणी स्कूलों में से एक है। ■

- राजेश रजक,
Centre of Excellence Team OLF, Pune

'शिक्षा में नई उड़ान, विनोबा ऐप बना पहचान' पेज 7

विनोबा विशेष

हम इस अंक में 3 ऐसे शिक्षकों की प्रेरक कहानियाँ आपको बताने जा रहे हैं, जिन्होंने बहुत छोटी उम्र में ही पोलिओ होने के बावजूद अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों पर मात कर अच्छी शिक्षा प्राप्त की। इतना ही नहीं, इन्होंने आकर्षक नौकरियों के बजाय ग्रामीण स्कूलों में शिक्षक बनकर शिक्षा स्तर में बदलाव लाने का कार्य चुना।

पैर थम गए,
पर हौसले उड़ते रहे,
हर दिल में वो ज्ञान का
दीप जलाते रहे।
हर मुश्किल में
बना दी अपनी पहचान,
विशेष शिक्षक हैं,
सच्ची प्रेरणा की शान!

पेज 4, 5, 6

'कॉमिक रिलीफ'

'Name' के आगे क्या लिखना है?

'एक से अधिक मातृभाषा इस जिले की एक बड़ी चुनौती रही है'

गडचिरोली: गडचिरोली का शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य बड़ा जटिल रहा है। इस आदिवासी और नक्सल प्रभावित जिले में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, शिक्षकों एवं शिक्षा विभाग के कर्मचारियों की प्रेरणा बनाए रखना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती थी।

जिला परिषद के अधिकतर स्कूल प्राथमिक शिक्षा पर केंद्रित हैं, इसलिए FLN हमारी मुख्य प्राथमिकता बन गई। चुनौतियां बहुत थीं—जैसे शिक्षकों की अनुपस्थिति, गैर-शैक्षिक कार्यों में उनकी व्यस्तता और स्टाफ की कमी।जिले में मराठी के अलावा, तेलुगु, बंगाली, छत्तीसगढ़ी, माड़िया और गोंडी जैसी कई मातृभाषाओंने और दूरस्थ क्षेत्रों में एकल-शिक्षक वाले स्कूलोंने इस समस्या को और जटिल बना दिया था।

राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'फुलोरा कार्यक्रम' और शिक्षकों के प्रशिक्षण जैसे प्रयासों ने सुधार की नींव रखी थी। इन कार्यक्रमों को आगे बढ़ाना और स्थायी, मापने योग्य बदलाव लाना मेरी जिम्मेदारी थी।

प्रशासन की ओर से कार्यक्रमों की कमी नहीं थी। इन प्रयासों को ठोस परिणामों से जोड़ने और शिक्षकों द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को पहचानने की आवश्यकता थी। राज्य और जिला स्तर पर प्रशिक्षण और अन्य कार्यक्रम खंडित थे। समुदाय की भागीदारी भी महत्वपूर्ण थी, खासकर आर्मोरी और वडसा जैसे शहरीकृत ब्लॉक्स में, जहां निजी स्कूल तेजी से लोकप्रिय हो रहे थे।

टेक्नोलॉजी का प्रभावी उपयोग

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए हमने कई उपाय किए, जिनमें से अधिकतर का कार्यान्वयन और व्यवस्थापन ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के सहयोग से संभव हुआ:

1. शिक्षकों के एक समर्पित समूह का गठन किया गया, जिसे गुणवत्ता अभ्यास गट कहा गया। इस समूह ने शिक्षण परिणामों में सुधार लाने के लिए गतिविधियों का मार्गदर्शन किया और शिक्षण प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने के प्रयास किए।
2. राज्य और राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में हमारी रैंकिंग काफी पीछे है और 10% से भी कम बच्चे छात्रवृत्ति परीक्षाओं में चयनित होते हैं। इसे सुधारने के लिए हमने कक्षा 5 के 6,500 और कक्षा 8 के 1,200 छात्रों को OMR शीट पर प्रैक्टिस टेस्ट देना शुरू किया। इस पहल से आनेवाले छात्रवृत्ति परीक्षा में हम बेहतर परिणामों की अपेक्षा कर रहे हैं। इस प्रक्रिया को सटीक और तेज़ी से लागू करने में OLF के विनोबा ऐप का विशेष योगदान रहा।
3. विनोबा ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवाले शिक्षकों को पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया। साथ ही, प्रशासनिक कार्यों को कम कर के शिक्षकों को पढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने में मदद की। कमजोर प्रदर्शन करनेवाले स्कूलों के केंद्रप्रमुखों और प्रधानाध्यापकों के साथ नियमित बैठकें की गईं, ताकि उनकी समस्याओं को समझा और सुलझाया जा सके।
4. विनोबा ऐप ने सरकारी संचार को पूरी तरह से पेपरलेस और तेज़ बनाया। यह ऐप महत्वपूर्ण डेटा को व्यवस्थित और सुरक्षित रूप से संग्रहित करता है, जिससे भविष्य में इसे संदर्भ के लिए तुरंत उपयोग किया जा सके। इस ऐप ने जिलों और राज्यों के शिक्षकों के बीच संवाद और सहयोग को मजबूत किया है। ■

श्रीमती आयुषी सिंह

सीईओ, जिला परिषद, गडचिरोली

आगे की ओर...

शिक्षा क्षेत्र में रातोंरात बदलाव लाना संभव नहीं है। इसके लिए निरंतर प्रयास और धैर्य की आवश्यकता होती है। गडचिरोली के उत्तरी ब्लॉक्स में छात्रवृत्ति परीक्षाओं में सुधार के संकेत मिले हैं, जबकि दक्षिणी ब्लॉक्स में प्रगति अभी जारी है।

शुरुआत में विनोबा ऐप को लेकर शिक्षकों में झिझक थी, लेकिन अब इसका उपयोग लगभग सर्वव्यापी हो गया है। हमने ओपन लिंक्स फाउंडेशन के फाउन्डर-सीईओ श्री संजय डालमिया के सुझाव पर गडचिरोली में 'मॉडल स्कूल असेंबली' की पहल की। यह ज़िला परिषद स्कूलों को अनुशासन, एकता और छात्रों, शिक्षकों, यहां तक कि अभिभावकों के अच्छे कार्यों की त्वरित सराहना के साथ अपनी एक सकारात्मक पहचान बनाने में सहायता करेगी। इसका प्रभाव अब साफ़ दिखाई दे रहा है और सीखने की गुणवत्ता में लगातार सुधार हो रहा है। इस तरह, तकनीक का उपयोग, शिक्षकों के साथ सतत संवाद और मान्यता व प्रोत्साहन प्रणाली द्वारा हम FLN में स्थायी सुधार की आशा कर रहे हैं।

गडचिरोली के अनुभव ने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि रचनात्मकता, धैर्य और सामूहिक प्रतिबद्धता के साथ बदलाव संभव है।

सोलापुर: जिला परिषद विद्यालयों में शिक्षा में नवाचार लाने, तकनीक का उपयोग करके शिक्षकों का कार्य सरल बनाने और इन विद्यालयों की शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए सोलापुर जिला परिषद और ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के बीच विनोबा ऐप को सक्रिय करने हेतु एक समझौता किया गया है। इस अवसर पर "यशदा" के निदेशक डॉ. मल्लिनाथ कलशेट्टी, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री कुलदीप जंगम, शिक्षा अधिकारी (प्राथमिक) श्री कादर शेख और अन्य अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही ओपन लिंक्स फाउंडेशन के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री संजय डालमिया, श्री विश्वजीत पवार, श्री रघुनाथ वानखड़े और श्री सोमनाथ स्वामी भी मौजूद थे।

बुलढाणा: 17 जनवरी को आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में जिले के 5 शिक्षकों को 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार, 2 को महावाचन क्लब गतिविधियों के लिए और 2 शिक्षकों को लाइब्रेरी बैग देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जिला परिषद के सीईओ श्री गुलाबराव खरात, अन्य कई अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

गड़चिरोली: जिले के 12 शिक्षक और 3 केंद्र प्रमुखों को सम्मानित किया गया। 3 शिक्षकों को POM, 2 को मॉर्निंग असेंबली, 4 को स्पोकन इंग्लिश प्रोग्राम, 1 को लाइब्रेरी बैग और 2 को स्कॉलरशिप परीक्षाके लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षा अधिकारी विवेक नाकाडे, अन्य अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

भंडारा: यहां आयोजित एक कार्यक्रम में 9 शिक्षकों को सम्मानित किया गया, जिसमें 3 केंद्र प्रमुख भी शामिल थे। इनमें से 3 शिक्षकों को POM और 3 को 'किलबिल मुक्त मंच' में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला परिषद के सीईओ श्री समीर कुर्तकोटी, अन्य अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

दुर्ग: जिले के 12 शिक्षक और 3 केंद्र प्रमुखों को सम्मानित किया गया। इनमें से 5 शिक्षकों को POM, 3 को 'बोलेगा बचपन' गतिविधि के लिए और 12 को उत्कृष्ट 5वी, 8वी, 10वी, 12वी के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जॉइन्ट कलेक्टर एम. भार्गव, अन्य कई अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

धमतरी: यहाँ आयोजित एक कार्यक्रम में, जिले के 18 शिक्षक और 3 केंद्र प्रमुखों को सम्मानित किया गया। इनमें से 7 शिक्षकों को POM, 5 को 'मिशन अव्वल' और 6 को 'रचनात्मक लेखन' गतिविधि के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डीएमसी भुवन जैन, अन्य कई अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

गरियाबंद: यहाँ आयोजित एक जिला स्तरीय कार्यक्रम में, गरियाबंद जिले के 5 शिक्षकों को POM पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डीईओ ए.के. सारस्वत और डीएमसी के.एस.नायक के हाथों शिक्षकों का सम्मान हुआ। इस अवसर पर जिले के अन्य अधिकारी और विनोबा टीम के सदस्य उपस्थित थे।

जहां दीवारें भी सिखाती हैं!

टेंगना (धमतरी): हर महान बदलाव की शुरुआत एक विचार से होती है। ऐसा ही एक विचार उभरा श्री संतोष कुमार बांधव के मन में, जिन्होंने शिक्षा को नए आयाम देने का सपना देखा।

2009 में जब संतोष जी ने टेंगना के आदिवासी स्कूल में कदम रखा तो हालात बेहद खराब थे। जर्जर कक्षाएं, टूटी दीवारें, बुनियादी सुविधाओं का अभाव और ब्लैकबोर्ड तक नहीं। खेत की जमीन पर बने इस स्कूल में सांपों का आना आम बात थी।

प्रशासनिक रिकॉर्ड और जरूरी दस्तावेजों की अनुपस्थिति ने काम को और चुनौतीपूर्ण बना दिया था। संतोष जी याद करते हुए कहते हैं, "मुझे दर्द होता था कि इन बच्चों के पास सीखने के लिए न तो सही जगह है और न साधन।"

संतोष जी ने न केवल खुद दृढ़निश्चय दिखाया बल्कि पंचायत और गांववालों को भी स्कूल निर्माण में सहयोग के लिए प्रेरित किया। चार साल की मेहनत के बाद एक छोटा मगर मजबूत स्कूल तैयार हुआ। निर्माण के दौरान भी उन्होंने बच्चों की पढ़ाई को बाधित नहीं होने दिया। कभी पेड़ के नीचे तो कभी गांव के अन्य भवनों में कक्षाएं लगाईं। पढ़ाई को रोचक बनाने के लिए उन्होंने नाटक, अभिनय और खेलों का सहारा लिया।

2013 में स्कूल भवन बनने के बाद, संतोष जी ने शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए "रिसर्च मेला" शुरू किया। "मैं बच्चों को हस्तशिल्प, विज्ञान मॉडल, मजेदार गणित के खेल, ऐतिहासिक किरदार, स्ट्रीट प्ले जैसी चीजों के लिए तैयार करता हूं। उन्हें पता भी नहीं चलता कि वे कितना कुछ सीख रहे हैं," संतोष जी मुस्कुराते हुए कहते हैं।

कोविड-19 महामारी के दौरान अधिकांश स्कूल बंद थे, तब भी संतोष जी ने बच्चों की शिक्षा को रुकने नहीं दिया। उन्होंने स्कूल और गांव की दीवारों पर शैक्षिक सामग्री पेंट की, ताकि बच्चे घर के आसपास ही सीख सकें। अब ये एक ऐसा स्कूल है जहां दीवारें भी सिखाने लगी हैं। उनका यह प्रयास शिक्षा को नई दिशा देने का प्रतीक बन गया। वे कहते हैं, "यह तो बस शुरुआत है। मुझे अभी बहुत कुछ करना है और लंबा सफर तय करना है।"

बीते दो वर्षों में संतोष जी ने अपने अनूठे अध्ययन-अध्यापन के वीडियो बनाना शुरू किया। अब वे उन्हें विनोबा ऐप पर भी साझा करते हैं जो जिले के अन्य शिक्षकों और छात्रों के लिए प्रेरणा बन गए हैं। उनकी अनोखी अध्यापन शैली के कारण उन्हें अन्य स्कूलों में भी आमंत्रित किया जाता है। विनोबा ऐप पर अपने अनुभव साझा करते हुए संतोष जी कहते हैं, "यह ऐप शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक मंच है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने एक बड़ा परिवार पा लिया है, जहां सीखने और मनोरंजन का अद्भुत अनुभव मिलता है।" ■

कुट प्रश्न का उत्तर : 820

'मेरे छात्र मेरी ताकत हैं, और मैं उनकी'

खेदामारा (दुर्ग): राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षिका श्रीमती के. शारदा जी कहती हैं, "बच्चों को यह सिखाना बहुत ज़रूरी है कि जीवन में हर चुनौती को इच्छाशक्ति से पार किया जा सकता है। यही मेरे जीवन का लक्ष्य है।"

खेदामारा उच्च प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाती शारदा जी ने बीते 15 वर्षों में, अपनी मेहनत और लगन से दिहाड़ी मजदूरों के बच्चों का जीवन बदलकर शिक्षा की परिभाषा को नई दिशा दी है।

"मैं जब 5 वी कक्षा में थी, तब मेरी शिक्षिका ने न केवल मुझे पढ़ाई में मदद की, बल्कि मेरे लिए सरकारी योजना के तहत ट्राइसाइकिल का भी इंतजाम करवाया, जिससे मैं आत्मनिर्भर बन पाई। उसी दिन मैंने ठान लिया था कि मैं भी बड़े होकर बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम करूंगी।"

शारदा जी ने एमएससी, बी.एड. और अर्थशास्त्र में एम.ए. की डिग्री हासिल की और खेदामारा स्कूल में शिक्षिका बनी। "तब हालात बेहद कठिन थे। बच्चे स्कूल छोड़कर खेतों या अन्य कामों में लग जाते थे और माता-पिता शिक्षा के प्रति पूरी तरह उदासीन थे।" शारदा जी ने साहसिक कदम उठाते हुए पंचायत से आग्रह किया कि राशन जैसी सुविधाओं को बच्चों की स्कूल में उपस्थिति से जोड़ा जाए और बाल श्रम पर सख्ती से रोक लगाई जाए। यह उपाय सफल रहा और बच्चे स्कूल आने लगे।

इसके बाद उन्होंने और उनके सहयोगियों ने बच्चों की पढ़ाई को रोचक बनाने पर काम किया। उन्होंने सांप-सीढ़ी जैसे खेलों और रोल-प्ले के माध्यम से गणित और इतिहास जैसे विषय सिखाए। कार्टून और एनिमेशन का इस्तेमाल करके कठिन विषयों को आसान और दिलचस्प बनाया। उन्होंने बच्चों को वैदिक गणित के सरल तरीके सिखाए। डिजिटल टीएलएम बनाने के लिए स्कूल के बाद घर पर भी शारदा जी काम करती रहती। साथ ही, उन्होंने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिए अलग अलग एनजीओ की मदद से बच्चों के लिए स्वेटर, जूते और स्टेशनरी का इंतजाम भी किया।

इसी बीच शारदा जी के जीवन में एक कठिन मोड़ आया। उनके दाएं हाथ ने काम करना बंद कर दिया। "यह मेरे लिए बड़ा डरावना क्षण था। मेरे

हाथ ही मेरा सहारा थे। मैं रो पड़ी," वह भावुक होकर बताती हैं। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी थी। बड़े धैर्य से, एक लंबे और कठिन इलाज के बाद, उन्होंने अपने हाथ की क्षमता फिर से हासिल की।

COVID-19 के बाद जब बच्चों की पढ़ाई में गति धीमी हो गई तब शारदा जी ने उनके लिए 'गणित पुस्तिका' तैयार की, जिसमें QR कोड के जरिए उनके यूट्यूब ट्यूटोरियल्स तक पहुंचा जा सकता था। राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, रायपुर की ओर से कक्षा 6 से 12 तक के छात्रों के लिए विशेष 'गतिविधि-आधारित गणित पुस्तिका' तैयार की गई, जिसमें शामिल 3 3 शिक्षकों की एक टीम का शारदा जी ने नेतृत्व किया था। उन्होंने 2,000 से अधिक ई-शैक्षिक सामग्री तैयार की है, जिनमें खिलौना पुस्तक, FLN Poem Book, ऑडियो बुक्स, ब्लॉग्स और प्रेरणादायक वीडियो शामिल हैं। उन्होंने अन्य राज्यों के स्कूलों के साथ बच्चों कावर्चुअल सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी शुरू किया।

विनोबा ऐप को शारदा जी एक बड़ा विद्यालय मानती हैं। "यहां से मैं न केवल अन्य शिक्षकों से सीख सकती हूं, बल्कि अपनी सामग्री और नवाचारों को अनगिनत बच्चों तक पहुंचा सकती हूं। शिक्षक के लिए इससे बड़ी उपलब्धि और क्या हो सकती है," वह कहती हैं।

उनके अथक कार्य के लिए, उन्हें 2024 में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के हाथों 'राज्य शिक्षक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उनके बनाए 200 टीएलएम वीडियो राज्य सरकार की वेब-साइट CGSchool.in पर अन्य शिक्षकों के लिए उपलब्ध हैं।

शारदा जी कहती हैं, "अभी सब कुछ ठीक नहीं हुआ है। लेकिन मेरा विश्वास है कि एक दिन ये बच्चे ऊंचाइयों पर पहुंचेंगे। मैं उनमें वह काबिलियत देखती हूं। इसलिए ये बच्चे ही मेरी ताकत हैं और मैं उनकी।" ■

शिक्षा से आत्मनिर्भरता: ज़ुबैर सैय्यद की प्रेरक कहानी

चिखली खुर्द (चंद्रपुर): "गाँव के स्कूल के बच्चों को पढ़ाई में संघर्ष करते देख मुझे लगा कि उनके लिए शिक्षा का स्तर बेहतर करना मेरी ज़िम्मेदारी है। मैं भी इसी स्कूल में पढ़ा था और मुझे अपने अनुभवों से पता था कि शिक्षा ही जीवन को नई दिशा देती है। मैंने तय किया कि जो कुछ भी सीखा है, उसे इन बच्चों तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है।"

ये हैं श्री ज़ुबैर सैय्यद, जो हाल ही में जिला परिषद उच्च प्राथमिक शाला, चिखली खुर्द में शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए हैं। ज़ुबैर जी का सफर कभी आसान नहीं था। तीन साल की उम्र में उनके जीवन ने एक बड़ा कठिन मोड़ लिया, लेकिन उनका आत्मविश्वास और शिक्षा के प्रति लगाव कभी कम नहीं हुआ। उनके परिवार ने हर कदम पर उनका साथ दिया। वे कहते हैं, "घरवालों ने हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया। उन्होंने मुझे भरोसा दिया कि मैं किसी भी चुनौती का सामना कर सकता हूँ।"

इसी आत्मविश्वास से उन्होंने बीए, बीएससी और डी.एड जैसी शैक्षिक योग्यताएँ हासिल की। शिक्षक बनना उनका सपना था, लेकिन काफी प्रयासों के बाद भी जब शिक्षक की नौकरी नहीं मिल पाई तो उन्होंने अपने समय का सदुपयोग करने का एक उमदा तरीका सोचा।

वर्ष था 2017। "मैंने अपने गाँव के स्कूल की बिगड़ती स्थिति को देखा था। तो सोचा, क्यूँ न गाँव के बच्चों को पढ़ाना शुरू किया जाए? औपचारिक नियुक्ति जब होगी तब होगी।"

ज़ुबैर जी ने सात साल तक पूरी निष्ठा से गाँव के बच्चों को पढ़ाया। उन्होंने पढ़ाई को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए कई नवाचार किए। गणित, विज्ञान और भाषाओं को बच्चों के स्तर पर सरल तरीके से समझाने के लिए खेल और गतिविधियों का सहारा लिया। उनके प्रयासों से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ा, और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों में सुधार हुआ।

आज उनका स्कूल उन बच्चों के लिए एक प्रेरणा स्थल बन गया है, जो पहले पढ़ाई में रुचि नहीं रखते थे।

उनके समर्पण को चंद्रपुर जिला परिषद के शिक्षा विभाग ने भी सराहा। 5 सितंबर 2024 को शिक्षक दिवस के अवसर पर उन्हें सम्मानित किया गया और "मुख्यमंत्री युवा कार्य शिक्षा योजना" के तहत उन्हें चिखली खुर्द स्कूल में शिक्षक नियुक्त किया गया।

विनोबा टीम से बात करते हुए ज़ुबैर जी ने अपने सफर के बारे में सहजता से बात की। उनके शब्दों में न कोई शिकायत थी, न ही अहंकार। वे कहते हैं, "शिक्षा का असली उद्देश्य है आत्मनिर्भर बनना। हर बच्चे को अपने पैरों पर खड़ा होने का आत्मविश्वास मिलना चाहिए।"

श्री ज़ुबैर सैय्यद ने यह साबित कर दिया कि सच्ची लगन और शिक्षा के प्रति प्रेम के सामने कोई चुनौती टिक नहीं सकती। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि ज्ञानदान का कार्य न केवल दूसरों को, बल्कि स्वयं दाता को भी सशक्त बना देता है। ■

कविता

नव कोपल उगने लगे हैं शाला परिसर में...

नव प्रवेश के लिए आतुर है,
नन्हे-मुन्ने हर्षितमन है।
मन है पावन नव कक्षा में जाने की,
इन कोपल को हमको बनाना है।।

एक सफल वृक्ष सा पावन,
आओ संकल्पित हो जाए।
इन नन्हे बालक के मन को,
हम समझे और इनको बताएं ।।

तुम हो कौन तुम्हें क्या करना,
तुम भावी रक्षक ही बनना।
खुद की सोच बदलना होगा,
तब तुम उस शिखर में होगे ।।

तुमको मेहनत करना होगा,
राह कठिन है पर चलना होगा।
मुश्किल होगी राहों पर,
उससे तुमको लड़ना होगा ।।

खुद को समझ कर चलना होगा,
आगे आगे बढ़ना होगा।
अपनी डगर पहचान जो लोगे,
एक सफल इंसान बनोगे ।।

कोपल से सफल वृक्ष की दूरी,
तुमको ही तय करना होगा।
एक सफल इंसान बनोगे,
यह तुमको तय करना होगा ।।

श्रीमती सविता कौशिक (शिक्षिका)
शास. पूर्व माध्य. शाला
मुलमुला, ब्लॉक - पामगढ़,
जिला - जांजगीर-चांपा

'शिक्षा में नई उड़ान, विनोबा ऐप बना पहचान'

निनावी (नाशिक): निनावी के जिला परिषद प्राथमिक स्कूल की शिक्षिका श्रीमती सुशिला चोथवे के लिए विनोबा ऐप उम्मीद की एक नई किरण बनकर आया। "मैंने इसे जिज्ञासा के चलते खोला था, लेकिन यह मेरे कार्य का सबसे बड़ा सहारा बन गया। यह सिर्फ एक ऐप नहीं बल्कि मेरी पहचान का जरिया बन गया," वह कहती हैं।

इस ऐप ने उन्हें एक ऐसा मंच दिया जहां उन्होंने अपनी कक्षा में किए गए प्रयासों को साझा किया। उन्होंने बच्चों के लिए आयोजित गतिविधियों के वीडियो अपलोड किए और अन्य शिक्षकों से प्रेरणा ली। यह ऐप उनके लिए सरकारी दिशानिर्देशों, ज्ञानवर्धक सामग्री और शिक्षकों के अनुभवों का खजाना बन गया।

१२ महीने तक लगातार १२ बार "पोस्ट ऑफ द मंथ" का पुरस्कार जीतने से उनका आत्मविश्वास बढ़ा। बच्चों के लिए आयोजित "स्पेलिंग बी" और अन्य प्रतियोगिताओं ने स्कूल में सीखने के प्रति नई ऊर्जा भर दी। "विनोबा ऐप से मिलने वाले पुरस्कार साधारण नहीं थे। यह बच्चों की मेहनत और लगन का प्रतीक थे। इससे उनके माता-पिता भी प्रेरित हुए," वह गर्व से बताती हैं।

आज उनकी कक्षा में बच्चों की उपस्थिति बढ़ी है। बच्चे पढ़ाई में रुचि ले रहे हैं और अभिभावक भी स्कूल से जुड़ने लगे हैं। पूरे स्कूल में एक सकारात्मक माहौल बन गया है। वह संतोषभरे शब्दों में कहती हैं, "पहले हमारी मेहनत को कोई नहीं देखता था लेकिन अब, राज्यभर से सराहना मिल रही है। यह एक शिक्षक के लिए सबसे बड़ा सम्मान है।"

सुशिला जी का सफर आसान नहीं था। पहली कक्षा के 45 बच्चों को पढ़ाना उनके लिए किसी तपस्या से कम नहीं था, खासकर जब माता-पिता शिक्षा के महत्व से अनजान थे और बच्चों को स्कूल भेजना उनकी प्राथमिकता नहीं थी। इन चुनौतियों के बावजूद सुशिला जी ने गणित, विज्ञान और भाषा पर आधारित रचनात्मक गतिविधियों से बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि जगाई। इसके लिए उन्होंने स्कूल के बाद देर तक और छुट्टियों में भी मेहनत की।

धीरे-धीरे उनकी मेहनत रंग लाई। बच्चे नियमित स्कूल आने लगे, पढ़ाई में रुचि दिखाने लगे और माता-पिता भी प्रेरित होकर स्कूल से जुड़ने लगे। उनकी मेहनत को पहचान तब मिली जब विनोबा ऐप ने उन्हें एक मंच दिया। सुशिला जी जैसे शिक्षकों की मेहनत को पहचान दिलाना और उन्हें सशक्त बनाना टीम विनोबा का लक्ष्य है। ■

पुस्तकालय बैग: शिक्षा में नई उम्मीद

अकलतरा (जांजगिर-चांपा): सरकारी कन्या प्राथमिक विद्यालय, अकलतरा की शिक्षिका श्रीमती तीरथ बाई गोंड छात्रों की समझ बढ़े इसलिए TLM तयार करती रहती हैं। लेकिन उन्हें यह चिंता सताती थी कि इन सामग्रियों को कैसे व्यवस्थित और संरक्षित किया जाए।

उनके अधिकांश छात्र आदिवासी परिवारों से आते थे और पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी थे। ऐसे में पढ़ाई के प्रति उनकी रुचि जगाना और शिक्षा के महत्व को समझाना, ताकि वे इन सामग्रियों के प्रति अनुशासित हों, तीरथ बाई के लिए बड़ा कठिन था। दिसंबर 2024 में, विनोबा कार्यक्रम के तहत OLF ने उन्हें एक पुस्तकालय बैग प्रदान किया।

इस अनोखे बैग के आस पास मंडराते मंडराते पढ़ाई और FLN गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी बढ़ गई। तीरथ बाई बताती हैं, "यह छोटा सा पुस्तकालय एक ऐसा स्थान बन गया है, जहां वे एक-दूसरे के साथ सीखते, साझा करते और घुलते-मिलते हैं। यह पहल बच्चों के भविष्य

को संवारने और शिक्षकों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।" ■

सिवनी में एफएलएन मेला

सिवनी कलेक्टर सुश्री संस्कृति जैन के निर्देशन में शनिवार 11 जनवरी 2025 को जिले के सभी शासकीय प्राथमिक शालाओ में एफएलएन मेला का आयोजन किया गया। इस मेले में बच्चो के साथ-साथ पालक एवं जनप्रतिनिधी उत्साहपूर्वक सहभागी हुये। बच्चों से शारीरिक, बौध्दिक, भाषाज्ञान, संख्याज्ञान एवं रचनात्मक विकास से सम्बंधित गतिविधियाँ कराई गयी और अभिभावकों को बच्चों के रिपोर्ट कार्ड से अवगत कराया गया।

सुश्री जैन ने भी कुछ शासकीय प्राथमिक शालाओं के एफएलएन मेलों में जाकर बच्चों और अभिभावकों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने अभिभावकों से कहा कि वे समय-समय पर शाला में उपस्थित होकर बच्चों की प्रगति जरूर देखें।

अपर कलेक्टर श्री सी एल चनाप, अपर कलेक्टर सुश्री सुनीता खण्डाईत, जिला शिक्षा अधिकारी श्री एस एस कुमरे, जिला एवं ब्लॉक स्तरीय 183 अधिकारियों ने जिले की प्राथमिक शालाओं में बच्चे, शिक्षक, अभिभावक एवं माताओं के बीच उपस्थित होकर उन्हें प्रोत्साहित किया।

धमतरी में व्यापक करियर काउंसेलिंग कार्यक्रम

धमतरी कलेक्टर सुश्री नम्रता गांधी के पहल से पूरे जिले के विद्यार्थियों के लिए करियर काउंसेलिंग कार्यक्रम शुरू किया गया है। इसके अंतर्गत, ओपन लिंक फाउंडेशन (OLF) के विनोबा टीम ने मगरलोद ब्लॉक की जिम्मेदारी उठाई है। OLF ने ब्लॉक में 7 अलग अलग प्रशिक्षण केंद्र बनाए हैं जिनमें 29 स्कूलों से कुल 2,463 विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस में हर क्षेत्र के विशेषज्ञों और मोटिवेशनल स्पीकर्स को शामिल किया जा रहा है, जो बच्चों को उनकी

क्षमतानुसार कैरियर का मार्गदर्शन करेंगे।

इसके तहत, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भैंसमुडी और सिंगपुर में 2 जनवरी को OLF द्वारा कैरियर काउंसेलिंग का सेशन आयोजित किया गया। इसमें विद्यार्थियों को 10वीं और 12वीं के बाद मिलने वाले शैक्षणिक अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। विनोबा टीम से प्रोजेक्ट ऑफिसर हितेश निर्मलकर उपस्थित थे।

'2023-24 में 37 लाख से घटा स्कूलों में नामांकन'

वर्ष 2023-24 में, भारत के स्कूलों में नामांकन पिछले वर्ष की तुलना में 37 लाख से कम हो गया। यह जानकारी शिक्षा मंत्रालय के U D I S E + (यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन) के आंकड़ों से सामने आई है। UDISE प्लस एक डेटा संग्रहण मंच है, जिसे शिक्षा मंत्रालय द्वारा देशभर से स्कूल शिक्षा के आंकड़े एकत्रित करने के लिए विकसित किया गया है।

पीटीआई की एक ख़बर एक अनुसार 2022-23 में नामांकित छात्रों की संख्या 25.17 करोड़ थी, जबकि 2023-24 में यह घटकर 24.80 करोड़ हो गई। इस अवधि में छात्राओं की संख्या 16 लाख कम हुई, और छात्रों की संख्या में 21 लाख की कमी देखी गई। UDISE+ 2023-24 ने पहली बार छात्रों के डेटा को उनके आधार नंबरों के साथ स्वैच्छिक रूप से एकत्रित करने का प्रयास किया। अधिकारियों ने बताया कि यह प्रक्रिया छात्रों की विशिष्ट पहचान सुनिश्चित करने के लिए की गई, जो कि अपने आप में अनोखी है।

यह छात्र-आधारित डेटा 'घोस्ट स्टूडेंट्स' (फर्जी छात्रों) की पहचान करने में मदद करता है और योग्य छात्रों तक लाभ पहुंचाने में सहायता करता है। इससे सरकार के खर्च में बचत होती है और सुशासन को बढ़ावा मिलता है।

संजय डालमिया को विनोबा राष्ट्रीय सेवा पुरस्कार

ओपन लिंक्स फाउंडेशन (O L F) के फाउन्डर-सीईओ श्री संजय डालमिया को समाज में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए 2024 का विनोबा राष्ट्रीय सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। 'स्नेहलया' द्वारा दिया जानेवाला यह पुरस्कार नेशनल केमिकल लैबोरेटरी (N C L) के वेंचर सेंटर के संस्थापक डॉ. वी. प्रेमनाथ के हाथों प्रदान किया गया। 'स्नेहलया' एक भारतीय NGO है, जो HIV, एड्स, गरीबी, हिंसा और यौन तस्करी से प्रभावित महिलाओं, बच्चों और LGBT समुदायों को सहायता और सेवाएँ प्रदान करता है।

OLF देश के 23 जिलों में 35,000 से अधिक ज़िला परिषद (ZP) स्कूलों के साथ मिलकर काम कर रहा है। यह संस्था शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने, शिक्षकों को प्रेरित और सहयोग प्रदान करने के साथ-साथ जिला प्रशासन को कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायता करने के लिए प्रयासरत है।

कूट प्रश्न 7

This lock has a 3-digit code. Can you crack it using only these hints?

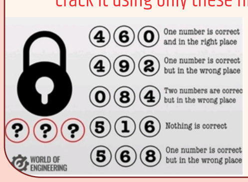

कूट प्रश्न 6 का उत्तर: Speak, Weak, Lace, Leak, Scale, Weasel, Clew, Leek

ओडिशा: अब कक्षा 1 में प्रवेश की आयु 6 वर्ष से अधिक

ओडिशा सरकार ने जनवरी में एक आधिकारिक अधिसूचना जारी कर घोषणा की कि 2025-26 शैक्षणिक सत्र से कक्षा 1 में प्रवेश की न्यूनतम आयु 6 वर्ष से अधिक होनी चाहिए, जो 1 सितंबर तक लागू होगी।

नई व्यवस्था के तहत, सभी प्राथमिक विद्यालयों में एक अतिरिक्त प्री-स्कूल कक्षा शुरू की जाएगी, जिसे 'शिशु वाटिका' नाम दिया गया है। इसमें 5 से 6 वर्ष की आयु के बच्चे प्रवेश ले सकेंगे।

अधिसूचना के अनुसार, राज्य पाठ्यक्रम ढांचे में बदलाव चरणबद्ध तरीके से 2025-26 सत्र से शुरू किया जाएगा। पहले चरण में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचे (N a t i o n a l C u r r i c u l u m F r a m e w o r k) के फाउंडेशनल स्टेज को अपनाया जाएगा।

महाराष्ट्र के सभी स्कूलों में राज्यगीत अनिवार्य होगा

महाराष्ट्र में राज्यगीत 'जय जय महाराष्ट्र माझा' को अब सभी स्कूलों -- यहां तक कि नॉन स्टेट बोर्ड स्कूलों में भी -- अनिवार्य किया जाएगा। यह निर्देश स्कूल शिक्षा विभाग की 100 दिवसीय योजना का हिस्सा है, जिसे हाल ही में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की उपस्थिति में प्रस्तुत किया गया।

स्कूल शिक्षा मंत्री दादासाहेब भुसे ने बताया कि सभी स्कूलों में मराठी भाषा के प्रभावी कार्यान्वयन पर भी जोर दिया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राज्य के सभी स्कूलों और आंगनवाड़ियों का जियो-टैगिंग किया जाएगा।

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन
बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**